ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in April 2025

जीवनपर्यन्त सीखना

संदीप कुमार, व्याख्याता (भूगोल) राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चैनराम का बास, धर्मशाला, सीकर

सारांश

प्रस्तुत प्रपत्र में 'आजीवन सीखना' शीर्षक पर चर्चा की जायेगी। आजीवन सीखना एक सदियों पुरानी अवधारणा है, लेकिन वर्तमान में इसकी लोकप्रियता में वृद्धि देखी गई है। यह सब 'ई–लर्निंग' के आगमन और अग्रणी उद्योगों में निरंतर कौशल–अंतराल के कारण है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज एवं राष्ट्र की उन्नति मानव पर ही निर्भर करती है। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक मानव को उसकी क्षमतानुसार स्वतंत्रतापूर्वक विकास करने की सुविधा प्राप्त हो इसके लिए शिक्षा प्राप्त करना अति आवश्यक है। शिक्षा मानव विकास हेतु प्रयुक्त किया जाने वाला सबसे प्रमुख माध्यम है। यह एकमात्र ऐसा माध्यम है जिसकी सहायता से व्यक्ति के समस्त पक्षों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यवहार में परिवर्तन लाकर उसे समाज का श्रेष्ठ नागरिक बनाती है तथा समाज के स्वरूप में अपेक्षित परिवर्तन की दिशा में उसे प्रेरित करती है।

आजीवन सीखना समग्र शिक्षा पर केंद्रित है। यह ऐसी शिक्षा की ओर संकेत करती हैं जो पारंपरिक शिक्षा प्रस्तावों और आधुनिक सीखने के अवसरों को एकीकृत करती है। इसमें लोगों को सीखने के तरीके को आगे बढ़ाने वाली सामग्री, प्रक्रिया और पद्धतियों का चयन करने के लिए प्रोत्साहित करने पर भी जोर दिया गया है ।

बीज शब्द :

- **लॉन्ग–लाइफ :–** जीवनपर्यन्त (लॉन्ग–लाइफ) का अभिप्राय लंबे समय तक चलने वाली प्रक्रिया से हैं।
- **सीखना :–** मनुष्य में सीखने का क्रम जन्म से मृत्यु तक चलता रहता है। कुछ सीखने के बाद मानव अनुभवों के आधार पर कार्यरूप देने का प्रयास करता है जिससे उसके व्यवहार में परिवर्तन आता है। व्यवहार में होने वाले इन परिवर्तनों को ही सीखना अथवा अधिगम कहते है।

परिचय :

सर्वोत्तम शिक्षक बनने के लिए, आजीवन शिक्षार्थी बने रहना आवश्यक है। आजीवन सीखने का तात्पर्य यह है कि जब हम कक्षा छोड़ देते हैं या डिग्री पूरी कर लेते हैं तो सीखना समाप्त नहीं होता है, बल्कि, जैसे–जैसे हम जीवन में आगे बढ़ते हैं, हमारे लिए सीखने, सिखाने और संसाधनों को साझा करने के लिए अन्य पेशेवर व्यक्तियों के साथ लगातार जुड़ना आवश्यक है। आजीवन सीखने की प्रक्रिया में संलग्न रहने से हमारें अभ्यास में उतरोत्तर वृद्धि करती है।

जीवनवर्यन्त सीखने का अर्थ व अवधारणा :

- जीवनपर्यंत सीखने का अर्थ है व्यक्ति अपने पूरे जीवन भर, चाहे वह औपचारिक शिक्षा के बाद हो या बिना किसी औपचारिक शिक्षा के, वह अपने ज्ञान, कौशल और क्षमताओं को विकसित करना जारी रखता है, इसे ही 'जीवनपर्यंत सीखना' कहते है।
- आजीवन सीखने को मुख्य रुप से व्यक्तिगत या व्यावसायिक कारणों से ज्ञान की निरंतर, स्वैच्छिक और स्व–प्रेरित खोज के रूप में परिभाषित किया गया है। यह किसी व्यक्ति की प्रतिस्पर्धात्मकता और रोजगार योग्यता के लिए महत्वपूर्ण तो है ही साथ ही साथ इसके द्वारा सामाजिक समायोजन, सक्रिय नागरिकता और व्यक्तिगत विकास को भी बढ़ाता है।"
- इसे अक्सर सीखना माना जाता है, जो बचपन की औपचारिक शिक्षा के वर्षों के बाद सें लेकर वयस्कता तक चलती रहती है। यह जीवन के अनुभवों के माध्यम से स्वाभाविक रूप से खोजी जाती है। आजीवन सीखने को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है जिसमें विभिन्न संदर्भों में सीखने वाले लोग शामिल हैं। इन वातावरणों में न केवल स्कूल बल्कि घर, कार्यस्थल और वे स्थान भी शामिल हैं जहां लोग अवकाश गतिविधियां करते हैं।
- हालाँकि, जहाँ सीखने की प्रक्रिया सभी उम्र के शिक्षार्थियों पर लागू की जा सकती है, वहीं उन वयस्कों पर ध्यान केंद्रित किया गया है जो संगठित शिक्षा की ओर लौट रहे हैं। इसके ढांचे पर आधारित ऐसे कार्यक्रम हैं जो शिक्षार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को संबोधित करते हैं, जैसे संयुक्त राष्ट्र का सतत विकास लक्ष्य तथा यूनेस्को इंस्टीट्यूट फॉर लाइफलॉन्ग लर्निंग, जो वंचित और हाशिए पर रहने वाले शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करता है। आजीवन सीखना सतत शिक्षा की अवधारणा से इस अर्थ में अलग है कि इसका दायरा व्यापक है।

आजीवन सीखने के लाभ और महत्व :

- **व्यक्तिगत विकास** :– यह हमें अनुशासन सिखाता है और जीवन भर अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रेरित करता है। इसके साथ ही जीवन के सभी क्षेत्रों से समान विचारधारा वाले व्यक्तियों का एक मजबूत नेटवर्क बनाने में मदद करता है।
- **व्यावसायिक विकास** :– जीवनपर्यन्त सीखना हमारी नौकरी की संभावनाओं को बड़े पैमाने पर बढ़ाता है, जिससे आप अपने प्रतिस्पर्धियों से आगे हो जाते हैं। आपको साहसिक कैरियर निर्णय लेने के लिए आत्मविश्वास से सुसज्जित करता है। आजीवन सीखने का प्राथमिक उद्देश्य लंबे समय में पूर्णता और खुशी प्रदान करने की क्षमता में निहित है।
- **आजीवन सीखना आत्म–प्रेरणा में वृद्धि करता है** :– आत्म–प्रेरणा आजीवन सीखने की कुंजी हो सकती है। इसके बिना, किसी व्यक्ति की आगे बढ़ने की इच्छा थम सकती है – वे पीछे रह सकते हैं या पूरी तरह से हार मान सकते हैं। यह भले ही अजीब लगे, लेकिन आत्म–प्रेरणा आजीवन सीखने की आवश्यकता और लाभ दोनों का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए, कभी–कभी प्रेरणा की कमी वाले किसी व्यक्ति के लिए सबसे अच्छी बात बस इसमें शामिल होना है।
- **आजीवन सीखना नए लक्ष्य बनाना सिखाता है** :– आजीवन सीखना उन नए विषयों में गोता लगाने का अवसर प्रदान करता है जो उन विषयों से संबंधित हैं जिन्हें कोई पहले से ही करीब रखता है। और जैसे–जैसे लोगों को नई रुचियाँ मिलती हैं, वे नए लक्ष्य और प्रेरक प्रेरक भी विकसित करते हैं। फिर, यह सीधे तौर पर आजीवन सीखने के प्रमुख लाभों में से एक पर वापस जाता है – मजबूत आत्म–प्रेरणा। क्योंकि कुछ हासिल करने की इच्छा – चाहे किसी नए विषय की जांच करना हो या वास्तव में किसी कौशल का उपयोग करना – का अर्थ है लक्ष्य निर्धारित करना। लक्ष्य निर्धारण आजीवन सीखने के लाभों में से एक है क्योंकि यह शिक्षा के लिए आंतरिक प्रेरणा कुंजी के प्रकार का मार्गदर्शन करने में मदद करता है। और जब भी कोई अपना लक्ष्य प्राप्त करता है, तो उसे उपलब्धि की प्रबल भावना का अनुभव होता है।
- **आजीवन सीखना अधिक आत्मविश्वास जाग्रत करता है** :– स्वाभाविक रूप से, जब कोई व्यक्ति कुछ ऐसा समझना शुरू करता है जो वह पहले नहीं समझता था, तो उपलब्धि की भावना उत्पन्न होती है। और अक्सर, यह समग्र रूप से अधिक आत्मविश्वास में विकसित होता है। क्योंकि जब कोई यह पहचानता है कि उनमें कुछ सीखने की क्षमता है जिसके बारे में उन्होंने सोचा था कि वे नहीं सीख सकते, तो उन्हें अचानक एहसास होता है कि वे और भी बहुत कुछ कर सकते है।
- **आजीवन सीखना आनंद के लिए सीखना है** :– मूलतः, आजीवन सीखने का यह लाभ बिना अधिक स्पष्टीकरण के स्पष्ट होना चाहिए। चल रही शिक्षा व्यक्तिगत या व्यावसायिक विकास के साथ–साथ आनंद के लिए भी की जानी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति अलग–अलग है, उसके विभिन्न जुनून और रुचियां हैं और आजीवन सीखने का एक हिस्सा उन विषयों को सीखने की स्वतंत्रता है जिनके बारे में सीखना रोमांचक है।
- **आजीवन सीखना दिमाग को तेज करता है** :– मस्तिष्क भले ही एक मांसपेशी न हो, लेकिन कम से कम एक तरह से यह उनके समान है। यदि आप इसका उपयोग नहीं करते हैं, तो यह उतना मजबूत नहीं होगा। आजीवन सीखने का एक लाभ यह है कि यह आपके मस्तिष्क को लगातार व्यायाम की स्थिति में रखता है। सीखना, वास्तव में, अपने दिमाग को स्वस्थ और जीवंत बनाए रखने का एक शानदार तरीका है।
- **आजीवन सीखना उन रुचियों की खोज करता है जिनके बारे में आ नहीं जानते है** :– कोई व्यक्ति जितना अधिक एक क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करेगा, उतना ही अधिक वह रुचि के नए क्षेत्रों की खोज करेगा। वास्तव में, कुछ लोगों को नया विषय उस विषय से भी अधिक संतुष्टिदायक और आनंददायक लग सकता है जिसने उन्हें इससे परिचित कराया था और सौभाग्य से, आजीवन सीखना अन्वेषण की इस प्रक्रिया को तेज करने में मदद कर सकता है।
- **आजीवन सीखना एक बड़ा नेटवर्क बनाना है** :– शिक्षा एक एकल उद्यम हो सकता है, लेकिन यह हमेशा उस तरह से काम नहीं करता है। अक्सर, सीखना समुदाय में होता है। समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के समूह में जो उत्तर खोजने के लिए मिलकर काम करते हैं। आजीवन सीखने के कारण नेटवर्किंग के अधिक अवसर मिल सकते हैं जो स्वयं कई लाभ प्रदान करता है।

- **आजीवन सीखना बेहतर शिक्षक बनना है:–** आजीवन सीखने से बेहतर शिक्षक बनने में मदद मिलती है। वे प्राप्त जानकारी के मूल्य को पहचानते हैं, और फिर इसे दूसरों तक पहुंचा सकते हैं जो इससे लाभान्वित हो सकते हैं। इसलिए आजीवन सीखना एक प्रक्रिया है। सबसे अच्छे शिक्षक वे हैं जो इसे पहचानते हैं और जो स्वयं कभी भी सीखना बंद नहीं करते हैं।
- **आजीवन सीखना बेहतर समाज के निर्माण में योगदान देता है :–** महान बुद्धि वाले लोग अपने कंधों पर समाज का भार उठाते हैं। चाहे कानून निर्माता हों, नेता हों, या साधारण नागरिक हों, विद्वान अपनी क्षमता के भीतर संस्कृति और सभ्यता को आकार देते हैं। बेशक, यह ऊंचा लगता है – शायद ऊंचा और शक्तिशाली भी। लेकिन इसकी जरूरत नहीं है. और विशेष रूप से, इसे सैद्धांतिक होने की आवश्यकता नहीं है – इसके लिए व्यावहारिक कार्यवाही की आवश्यकता है। आजीवन सीखना उद्देश्य और विचारशीलता के साथ आगे बढ़ने के साथ–साथ अपने आप में एक योग्य लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करता है।
- **आजीवन सीखना जीवन में नये अर्थ खोजना है :–** दुर्भाग्य से, बहुत से लोग स्वयं को विकट परिस्थितियों में फंसा हुआ पाते हैं। कभी–कभी, यह उनकी अपनी गलती हो सकती है। अन्य, बाहरी कारकों ने उनके संकट का कारण बना दिया है। आजीवन सीखने से कुछ नया करने की पेशकश करके निराशा की इस स्थिति के हानिकारक प्रभावों को दूर करने में मदद मिल सकती है। यह नई रुचियां और लक्ष्य ला सकती है, प्रेरक बना सकती है और अन्य चीजें ला सकती है जो किसी व्यक्ति की इच्छा को नवीनीकृत करने में मदद करती हैं।

निष्कर्ष :

आजीवन सीखना हर किसी के लिए आवश्यक है, लेकिन उन शिक्षकों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जिन्हें अपने छात्रों के लिए आजीवन सीखने के कौशल और स्वभाव को मॉडल करना चाहिए और ऐसे पेशे में काम करना चाहिए जो नए नवाचारों के जवाब में बदलता है। आधुनिक प्रौद्योगिकियां, विशेष रूप से वेब प्रौद्योगिकियां, संसाधनों तक पहुंच में सुधार और दूरी पर पेशेवरों के बीच सामाजिक संबंधों का समर्थन करके अभूतपूर्व तरीकों से आजीवन सीखने में भाग लेने के लिए शिक्षकों को सशक्त बनाती हैं।

सन्दर्भ :

1. शर्मा जी.आर., ''शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास'', इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, संस्करण 2007, पृ.सं. 01
2. डॉ. पंचौरी गिरीश, ''शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार'', आर.लालबुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2012, पृ.सं. 02
3. शर्मा निधि "शिक्षा के उद्देश्य, ज्ञान एवं पाठ्यचर्या" शिक्षा प्रकाशन, जयपुर,संस्करण 2016.
4. www.emeritus.org
5. www.emeritus.org
6. डॉ. कड़वासरा जगदीश प्रसाद, डॉ. शर्मा हनुमान सहाय, डॉ. पाटनी उषा, ''समसामयिक भारत और शिक्षा'' अरिहंत शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
7. www.dictionary.cambridge.org
8. डॉ. गुप्ता एस. पी., डॉ. गुप्ता अल्का, ''उच्चर शिक्षा मनोविज्ञान'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, संस्करण 2013, पृ.सं. 01
9. www. edtechbooks.org